भारतीय दर्शन

लेखक

पद्मभूषण आचार्य बलदेव उपाध्याय

शारदा मंदिर
वाराणसी

भारतीय दर्शन

[भारतवर्ष की विविध दार्शनिक-वैदिक और तान्त्रिक-विचारधाराओं का प्रामाणिक विवेचन]

University Department of Yoga RU
No/PGDY/ 219
Library

लेखक

पद्मभूषण

आचार्य बलदेव उपाध्याय

भूतपूर्व सञ्चालक, अनुसन्धान संस्थान
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
तथा
पूर्व प्राध्यापक
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रस्तावना-लेखक

महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज

DROLIA PUSTAK BHANDAR
Yoga, Ayurveda, Religious Books & Satkarma Acupressure evam Magnate Goods
09458949381, 01334-260614,09837300687
Near Bharat Mata Mandir, Haridwar-249410 (U.K.) INDIA
E-mail : drolia_books@yahoo.co.in
Website : www.droliabooks.com

शारदा मन्दिर
वाराणसी

विषय-सूची

प्रथम खण्ड

पृष्ठ संख्या

(१) उपोद्घात १-२६

'दर्शन' का अर्थ तथा उपयोग २, भारतीय दर्शन की कतिपय विशेषताएँ ८, भारतीय दर्शन का लक्ष्य १२, भारतीय दर्शनों का श्रेणी-विभाग १६, भारतीय दर्शनों का काल-विभाग १८, भारतीय दर्शनों की पारस्परिक समानता २० ।

(२) श्रौत दर्शन २७-४८

वेद का महत्त्व २७, वैदिक देवता—हिरण्यगर्भ ३२, पुरुष ३२, स्कम्भ ३३, उच्छिष्ट ३३, अद्वैत की भावना ३४, उपनिषद् ३६, उपनिषद् के सिद्धान्त—आत्मतत्त्व ३९, ब्रह्मतत्त्व ४१, उपनिषदों का व्यवहार पक्ष ४५, उपनिषदों का चरम लक्ष्य ४६ ।

(३) गीता-दर्शन ९-७२

महाभारत-पूर्व काल ४९, श्रीमद्भगवद्गीता—महत्त्व ५४, स्वरूप ५५ ।

गीता का आध्यात्मपक्ष—ब्रह्म-तत्त्व ५५, प्रकृति ५७, जीव तत्त्व ५८, जगत-तत्त्व ५९, पुरुषोत्तम ६० ।

गीता का व्यवहार पक्ष—विभिन्न मार्गों का सामञ्जस्य ६०, गीता तथा कर्मयोग ६२, गीता तथा ज्ञानयोग ६४, गीता तथा ध्यानयोग ६५, गीता तथा भक्तियोग ६६, समन्वय मार्ग ६७, सिद्धावस्था ६८, गीता का सुलभ साधन ६९, गीता का आदर्श मानव ७१ ।

द्वितीय खण्ड

(४) चार्वाक दर्शन ७५-८९

चार्वाक दर्शन—आरम्भ ७६, नामकरण ७७, संस्थापक ७८, ग्रन्थ ७९ ।

चार्वाक ज्ञान-मीमांसा—प्रत्यक्ष ८०, अनुमान ८०, अनुमान तथा लोक ८०, स्वभाववाद ८१ ।

चार्वाक तत्त्वमीमांसा—जगत् ८२, जीव ८२, ईश्वर ८४।

चार्वाक आचार-मीमांसा—धर्म की अस्वीकृति ८५, आधिभौतिक सुखवाद ८६।

समीक्षा ८७।

(५) जैन दर्शन ९०–११८

जैन धर्म का उदय तथा विस्तार ९०, जैन प्रमाण—साहित्य ९३।

जैन ज्ञानमीमांसा—परोक्ष ज्ञान १००, प्रत्यक्ष ज्ञान १००, स्याद्वाद १०१, नयवाद १०२।

जैन तत्त्व-समीक्षा—वस्तु १०६, द्रव्य १०६, जीव १०९, अजीव ११०।

जैन आचार-मीमांसा—रत्नत्रय ११३, कर्म ११३, पदार्थ ११३, गुणस्थान ११५।

समीक्षा ११६।

(६) बौद्ध दर्शन ११९–१६४

गौतम बुद्ध ११९, बुद्ध की आचार-शिक्षा १२१।

दार्शनिक सिद्धान्त—नैरात्म्यवाद १२६, सन्तानवाद १२७, धार्मिक विकास १२८।

दार्शनिक विकास—परिचय १३२, वैभाषिक सम्प्रदाय १३८, सौत्रान्तिक सम्प्रदाय १४३, योगाचार सम्प्रदाय १४८, माध्यमिक सम्प्रदाय १५४।

समीक्षा १६१।

तृतीय खण्ड

(७) न्याय दर्शन १६७–२१२

नामकरण १६७, न्याय विद्या की उत्पत्ति १६८, न्यायदर्शन के प्रसिद्ध आचार्य १६९।

न्याय प्रमाण-मीमांसा—प्रमा १७६, प्रत्यक्ष १७८, सन्निकर्ष १८०, अनुमान १८२, व्याप्ति १८९, हेत्वाभास १९२, उपमान १९७, शब्द १९८, कार्य-कारण-सिद्धान्त, न्याय और अरस्तू २०१।

न्याय तत्त्व-समीक्षा—प्रमेय २०२, ईश्वर का रूप २०३, ईश्वर-सिद्धि के प्रमाण २०४।